# सहायक प्राध्यापक लिखित परीक्षा

## पाठ्यक्रम – हिन्दी

### इकाई – I

### हिन्दी भाषा और विकास

अपभ्रंश (अवहट्ट सहित) और पुरानी हिन्दी का संबंध, काव्य भाषा के रूप में अवधी का उदय और विकास, काव्य भाषा के रूप में ब्रज भाषा का उदय और विकास, साहित्यिक हिन्दी के रूप में खड़ी बोली का उदय और विकास, मानक हिन्दी का भाषा वैज्ञानिक विवरण (रूपगत), हिन्दी की बोलियाँ–वर्गीकरण तथा क्षेत्र, नागरी लिपि का विकास और उसका मानकीकरण।

हिन्दी प्रचार के आन्दोलन, प्रमुख व्यक्तियों तथा संस्थाओं का योगदान, राजभाषा के रूप में हिन्दी ।

हिन्दी भाषा – प्रयोग के विविध रूप–बोली, मानक भाषा, संपर्क भाषा, राजभाषा और राष्ट्रभाषा, संचार माध्यम और हिन्दी ।

### इकाई– II

### हिन्दी साहित्य का इतिहास

हिन्दी साहित्य का इतिहास–दर्शन, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की पद्धतियाँ ।
हिन्दी साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रन्थ, हिन्दी के प्रमुख साहितयिक केन्द्र, संस्थाएँ एवं पत्र पत्रिकाएँ, हिन्दी साहित्य के इतिहास का काल विभाजन और नामकरण।
आदिकाल : हिन्दी साहित्य का आरंभ कब और कैसे ? रासो साहित्य, आदि कालीन हिन्दी का जैन साहित्य, सिद्ध और नाथ साहित्य, अमीर खुसरों की हिन्दी कविता, विद्यापति और उनकी पदावली, आरम्भिक गद्य तथा लौकिक साहित्य।
मध्यकाल : भक्तिकाल की पूर्व पीठिका ।
भक्ति आन्दोलन के उदय के सामाजिक सांस्कृतिक कारण । भक्ति काव्य का स्वरूप, प्रमुख निर्गुण एवं सगुण सम्प्रदाय, निर्गुण सगुण का संबंध तथा साम्य और वैषम्य ।
वैष्णव भक्ति की सामाजिक, सांस्कृति पृष्ठभूमि, आलवार संत, प्रमुख सम्प्रदाय और आचार्य । भक्ति आन्दोलन का अखिल भारतीय स्वरूप और उसका अन्तः प्रादेशिक वैशिष्ट्य ।
हिन्दी संत काव्य : संत काव्य का वैचारिक आधार, प्रमुख निर्गुण संत कवि–कबीर, नानक दादू, रैदास ।

कबीर भक्ति भावना, समाजदर्शन, विद्रोह भावना, काव्य कला, निर्गुण का स्वरूप । कबीर के राम और तुलसी के राम में अंतर, रहस्य साधना, कबीर की प्रासंगिकता ।

कबीर ग्रन्थावली --सं. हजारी प्रसाद द्विवेदी--दोहा, पद संख्या--160--209 तक ।

हिन्दी सूफी काव्य : सूफी काव्य का वैचारिक आधार, हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और काव्य – मुल्लादाऊद (चंदायन) कुतुबन (मिरगावती), मंझन (मधुमालती), मलिक मोहम्मद जायसी (पद्मावत)

जायसी–प्रेम भावना, लोक तत्व, कथानक रूढ़ि, काव्य दृष्टि, सांस्कृतिक दृष्टि, सौन्दर्य दृष्टि, प्रकृतिचित्रण, रूपक तत्व । जायसी ग्रन्थावली –सं. रामचन्द्र शुक्ल नागमती वियोग खंड ।

सूफी प्रेमाख्यानकों का स्वरूप, हिन्दी सूफी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ ।

हिन्दी कृष्ण काव्य : विविध संप्रदाय, वल्लभ संप्रदाय, अष्टछाप, प्रमुख कृष्णभक्त कवि और काव्य।

सूरदास–(सूरसागर) भक्ति भावना, वात्सल्य वर्णन, गीति तत्व, माधुर्य और श्रृंगार वर्णन, लोक तत्व, सौन्दर्य बोध, प्रकृति चित्रण, भ्रमरगीत, अन्तर्वस्तु और विदग्धता, लीला भाव ।

सूरदास–भ्रमरगीतसार, सं. रामचन्द्र शुक्ल पद सं. 21 से 70 तक ।

नन्ददास (रास पंचाध्यायी), भ्रमरगीत परम्परा, गीति परम्परा और हिन्दी कृष्ण काव्य – मीरा और रसखान ।

हिन्दी रामकाव्य : विविध संप्रदाय, रामभक्ति शाखा के कवि और काव्य, तुलसीदास की प्रमुख कृतियाँ, काव्य रूप और उनका महत्व, तुलसीदास की भक्तिभावना, सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि, लोक मंगल, काव्य दृष्टि, दर्शन, मानस की प्रबंध कल्पना, मर्यादा भाव, चित्रकूट सभा का महत्व, सामाजिक पारिवारिक आदर्श, युग बोध, रामराज्य की परिकल्पना।

उत्तराकांड–रामचरितमानस (गीताप्रेस गोरखपुर)

रीतिकाल : सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य, रीतिकाल के मूल स्त्रोत, रीतिकाल की प्रमुख प्रवत्तियाँ, रीति कालीन कवियों का आचार्यत्व, विविध काव्य धाराऐं, रीतिकाल के प्रमुख कवि–केशव: काव्य दृष्टि, संवाद योजना । भक्तिराम, भूषण: युग बोध, अन्तर्वसतु, काव्य कला ।

बिहारीलाल : सौन्दर्यभावना, बहुलता, काव्य कला ।

देव, पदमाकर । घनानन्द : सवच्छंद योजना, प्रेम व्यंजना, काव्य दृष्टि ।

रीति काव्य में लोक जीवन

## इकाई– III

## आधुनिक काल –

आधुनिकता–अवधारणा और उसके उदय की पृष्ठभूमि, हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास, भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य, 1857 की राज्य क्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, हिन्दी पुनर्जागरण और भारतेन्दु, भारतेन्दु और उनका मंडल, 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध की हिन्दी पत्रकारिता ।

द्विवेदी युग : महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, हिन्दी नवजागरण तथा नवजागरण और सरस्वती, काव्य भाषा के रूप में खड़ी बोली की प्रतिष्ठा, हरिऔध, मैथिलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्य धारा, राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि, स्वच्छंदता–वाद और उसके प्रमुख कवि ।

स्वच्छंदता वाद और छायावाद :

छायावाद--सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि, वैचारिक पृष्ठभूमि, स्वाधीनता की चेतना, गाँधी का प्रभाव । छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ, छायावाद में रहस्यानुभूमि का स्वरूप, छायावाद काव्य में नारी, छायावादी कवियों का सौन्दर्य बोध, छायावादी काव्य में प्रगीति तत्व, छायावाद की काव्य भाषा ।

छायावाद : शक्ति काव्य, प्रबंधकल्पना की नवीनता, छायावाद के प्रमुखकवि ।

प्रसाद – जीवनदर्शन, सांस्कृतिक दृष्टि, सौन्दर्य चेतना, समरसता और आनन्दवाद, कामायनी में रूपक तत्व, कामायनी का प्रबंध विन्यास, कामायनी–आधुनिक संदर्भ कामायनी की विश्वदृष्टि । कामायनी : श्रद्धा, इड़ा सर्ग ।

निराला : सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि, प्रगति चेतना, मुक्त छन्द, निराला के प्रयोग के विविध आयाम, लम्बी कविताएँ : रामकी शक्ति पूजा, बादल राग, कुकुरमुत्ता ।

पंत : प्रगति चित्रण, काव्य यात्रा के विविध सोपान, काव्य भाषा, पल्लव की भूमिका, कल्पनाशीलता, सौन्दर्य चेतना ।

महादेवी : वेदना तत्व, प्रगीति, प्रतीक योजना, रहस्यवाद, काव्य भाषा, बिम्ब विधान ।

वैचारिक पृष्ठभूमि, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद

प्रगतिवाद : सामाजिक दृष्टि, नागार्जुन–यथार्थ चेतना और लोक दृष्टि ।

केदारनाथ अग्रवाल -- प्रकृति चित्रण और सौन्दर्य बोध ।

प्रयोगवाद : व्यष्टि चेतना, अज्ञेय–प्रयोगधर्मिता और काव्य भाषा ।

असाध्यवीणा, नदी के द्वीप ।

प्रयोगवाद और नयी कविता, नयी कविता में व्यष्टि–समष्टि बोध, मुक्ति बोध– समाजबोध, फैंटसी, कविता–अंधेरे में ।

समकालीन कविता : काल संरावित्त और लोक संसक्ति, रघुवीर सहाय–राजनीतिक चेतना, काव्य भाषा, कुँअरनारायण–मिथकीय चेतना, काव्य दृष्टि ।

## इकाई–IV

## हिन्दी साहित्य की गद्य -

विधाएँ :

गल्प और इतिहास, कल्पना और यथार्थ ।

हिन्दी उपन्यास – मध्यवर्ग का उदय और उपन्यास, उपन्यास और यथार्थ तथा उसके विविध रूप, उपन्यास और आधुनिकता । हिन्दी उपन्यास और स्वाधीनता आन्दोलन, स्वाधीन भारत के प्रमुख हिन्दी उपन्यास, हिन्दी उपन्यास में नायक और नायिका की अवधारणा तथा उसके बदलते स्वरूप, हिन्दी उपन्यास में शिल्पगत प्रयोग ।

प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी उपन्यास – परीक्षा गुरू, चन्द्रकांता – वस्तु और शिल्प ।

प्रेमचन्द युगीन उपन्यास – गोदान–मुख्य पात्र, यथार्थ और आदर्श, वस्तुतशिल्प वैशिष्ट्य, गोदान और भारतीय किसान, गोदान में गॉंव और शहर, महाकाव्यात्मक उपन्यास की परिकल्पना ।

प्रेमचन्दोत्तर उपन्यास – प्रमुख उपन्यासकार – अज्ञेय – शेखर एक जीवनी – वस्तुशिल्प गत वैशिष्ट्य, शेखर के चरित्र का वैशिष्ट्य, उपन्यास और काव्यात्मकता, मनौवैज्ञानिक आयाम ।

जैनेन्द्र हजारी प्रसाद द्विवेदी (बाणभट्ट की आत्मकथा – इतिहास और सांस्कृतिक चेतना, भाषा – शिल्प वैशिष्ट्य, आत्म कथा का तात्पर्य । आधुनिकता निपुणिका और नारी मुक्ति की आकांक्षा)

यशपाल, अमृतलाल नागर, फणीश्वरनाथ रेणु (मैला आँचल–वस्तुशिल्प, आंचलिकता, लोक संस्कृति और भाषा, ग्राम जीवन में होने वाले आर्थिक, राजनैतिक परिवर्तन और सामाजिक गतिशीलता का चित्रण), भीष्मसाहनी, कृष्णा सोबती, निर्मल वर्मा, नरेश मेहता, श्रीलाल शुक्ल, राही मासूम रजा, रांगेय राघव, मन्नू भंडारी।

हिन्दी कहानी और प्रमुख कहानीकार : प्रेमचन्द, प्रसाद ओर जैनेन्द्र । प्रेमचन्द, प्रसाद की कहानी कला ।

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी : प्रमुख कहानी आंदोलन, नयी कहानी–संवेदना और शिल्प, समकालीन कहानी–संवेदना और शिल्प, हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श ।

हिन्दी नाटक : हिन्दी नाटक और रंगमंच, विकास के चरण और रंगमंच, विकास के चरण और प्रमुख नाट्य प्रवृत्तियाँ, हिन्दी नाटक और भारतेन्दु (भारत दुर्दशा, अंधेर नगरी) यर्थाथ बोध ।

प्रसाद के नाटक – चन्द्रगुप्त, ध्रुव स्वामिनी – राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना, नाट्य शिल्प ।

प्रसादोत्तर नाटक – अंधायुग, आधे अधूरे–आधुनिकता बोध, प्रयोगधर्मिता और नाट्य भाषा, आठवॉं सर्ग, हिन्दी एकांकी ।

निबंध और निबंध के प्रकार : प्रमुख निबंधकार–बालकृष्ण भट्ट, रामचन्द्र शुक्ल (चिंतामणि–अन्तर्वसतु और शिल्प) शुक्लोत्तर निबंध और निबंधकार – हजारी प्रसाद द्विवेदी, कुबेरनाथ राय, विद्यानिवास मिश्र – संस्कृतिबोध व लोक संस्कृति, हरिशंकर परसाई ।

हिन्दी की अन्य गद्य विधाऐं : रेखाचित्र, संस्मरण, यात्रा साहित्य, आत्मकथा, जीवनी, रिपार्पेताज ।

## इकाई – V

## काव्य शास्त्र और आलोचना शास्त्र

काव्य हेतु और काव्य प्रयोजन, काव्य के लक्षण : शब्दार्थो सहितौ काव्यम (भामह), तददोषौ शब्दार्थो सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि (मम्मट), वाक्यं रसात्मकं काव्यम (विश्वनाथ), रमणीयर्थ – प्रतिपादक : शब्दः काव्यम् (पण्डितराज जगन्नाथ), काव्य की आत्मा । , रीतिगुण दोष ।

प्रमुख सिद्धांत या सम्प्रदाय – रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति और औचित्य–सामान्य परिचय ।

रस का स्वरूप, रस–निष्पत्ति, साधारणीकरण, रस के अवयव, सहृदय की अवधारणा ।

शब्द शक्तियाँ और ध्वनि का स्वरूप । हिन्दी काव्य शास्त्र का इतिहास ।

अलंकार – यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, संदेह, भ्रांतिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, समासोक्ति, अत्युक्ति, विशेषोक्ति, दृष्टांत, उदाहरण, प्रतिवस्तूपमा, निदर्शना, अर्थान्तरन्यास, विभावना, असंगति तथा विरोधाभास ।

मिथक, फन्तासी, कल्पना, प्रतीक और बिम्ब ।

स्वच्छंदतावाद और यथार्थवाद, संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता ।

हिन्दी आलोचना और प्रमुख आलोचक तथा हिन्दी आलोचना का विकास –

रामचन्द्र शुक्ल और उनके आलोचनात्मक प्रतिमान–रामचन्द्र शुक्ल–रसदृष्टि तथा लोक मंगल की अवधारणा ।

नन्द दुलारे वाजपेयी – सौष्ठववादी आलोचना, रामविलास शर्मा–मार्क्सवादी समीक्षा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. नामवरसिंह, विजयदेव नारायण साही । पाश्चात्य आलोचना व प्रमुख आलोचक प्लेटो और अरस्तू का अनुकरण सिद्धान्त तथा अरस्तू का विरेचन सिद्धान्त ।

लोंजाइनस काव्य में उदात्त तत्व ।

क्रोंचे–अभिव्यंजनावाद ।

आई.ए. रिचर्ड्स – संप्रेषण सिद्धांत, मूल्य सिद्धांत और काव्य भाषा सिद्धान्त ।

टी०एस० इलियट– निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ सह संबंधी, परम्परा की अवधारणा ।

रूसो–रूपवाद, नयी समीक्षा ।

कालरिज–कल्पना और फैण्टेसी ।

वर्ड्सवर्थ का काव्य भाषा सिद्धांत ।

समकालीन आलोचना की कतिपय अवधारणाएँ :

विडम्बना (आयरनी), अजनबीपन (एलियनेशन), विसंगति (एब्सर्ड), अन्तर्विरोध (पैराडाक्स), विखंडन (डीकन्स्ट्रक्शन) ।